RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य में समाज

ललित कुमार

शोध– छात्र, हिन्दी विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा)

साहित्य का निर्माण समाज से होता है। साहित्य सामाजिक मूल्यों काअनुशीलन करता है। समाज के यथार्थ का प्रतिबिंब साहित्य में दिखाईदेता है। समाज मानवीय संबंधों का ताना– बाना है और साहित्य मेंइन्ही संवेदनाओं व सरोंकारों को साहित्य के माध्यम से सबसे बहेतरढ़ग से प्रस्तुत किया जा सकता है। काशीनाथ सिंह ऐसे रचनाकर है जोयथार्थ को अपने ही ढ़ग से प्रस्तुत करते है। काशीनाथ सिंह अपने कथासाहित्य में समाज को सम्पूर्ण रुप में प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं।बिना किसी लाग– लपेट के वे आम लोगो के समान्य जीवन के व्यवहारको चित्रित करने मे तनिक भी नहीं हिचकते। आम जीवन की दशा कानिरुपण करते हुए वे समाज में प्रचलित शुभ– अशुभ, हितकारी –अहितकारी, भद्र– अभद्र शब्दों के फेर मे नहीं पडते। समाज को सही सेसमझने के लिए वे उन्ही शब्दों का चयन करते हैं जो वहाँ प्रचलित हैं।इसी ओर अपने उपन्यास काशी की अस्सी में लिखते हैं– ' मित्रों, यहसंस्मरण व्यस्कों के लिए है, बच्चों और बूढों के लिए नहीं; और उनके लिएभी नहीं जो यह नही जानते कि अस्सी ओर भाषा के बीच नन्द भोजाईऔर साली – बहनोई का रिश्ता है जो भाषा की गन्दगी, गाली, अश्लीलताऔर जाने क्या– क्या देखते हैं और जिन्हें हमारे मोहल्ले के भाषाविद् 'परम'(चूतिया का पर्याय) कहते हैं, वे भी कृपया इसे पढ़कर अपना दिल ना दुखाएँ–''[1]

काशीनाथ सिंह के कथा साहित्य में रचनात्मककर्म बहुत ही सहज है। इनकी रचना में सामाजिक विकास` मुल्यों मेंसहयोग की दृष्टि दिखाई पडती है। इनकी सामाजिक दृष्टि ग्रामीण व शहरदोनों परिवशों में दिखाई देती है। गाँव के परिवेश में परम्परा व आधुनिकताका द्वंद स्पष्ट रुप से दिखाई देता है। भारतीय समाज का मध्यम वर्ग उसकीसमस्याएँ स्पष्ट रुप से देखी जा सकती हैं। शिक्षा, पलायन, गरीबी,बेरोजगारी, चारित्रिक पतन, मूल्यों की गिरावट, जाति– प्रथा जैसी समस्याएँस्पष्ट रुप से दिखाई देती हैं।

महानगरीय जीवन व उससे उत्पन्न होने वाली विसंगतियों को इन्होंने बड़े स्पष्टरुप से अंकित किया है। महानगरों में व्यक्ति किस प्रकार अपने मूल्यों को खोचुका है तथा स्वार्थों की पूर्ति हेतु किस प्रकार वह दूसरों के जीवन को दाव पर लगादेता है, उसकी प्रकृति इनके कथा साहित्य में देखी जा सकती है। 'काशी के अस्सी 'में शहरी जीवन में बढ़ रहे दिखावे को उन्होने बखूबी प्रस्तुत किया है।स्वार्थ ही जीवन की मूल साधना है, काशीनाथ सिंह ने हरिद्वार के माध्यम से अभि–व्यक्ति प्रदान की है। राजनीति मे नोसिखुआ चेले ने हरिद्वार से पूछा आदर्श औरसिद्धांत की राजनीति क्या होती है नेताजी ? हरिद्वार ने उसे घूरकर देखा– ऐसी कोईराजनीति नही होती, जो ऐसी राजनीति करते हैं, वे दाँत निपोरते और हाथ पसारतेहुए मर जाते हैं, थोडा रुककर बोले –' आदर्श बालापोथी की चीज है! वाद– विवादप्रतियोगिता में भाग लेने और पुरस्कार जीतने की। आदर्श की चिंता की होती श्री कृष्ण ने तोअर्जुन भी मारा जाता और भीम भी! पांड़व साफ हो गए होते। आदर्श तो पतिव्रताका लेकिन सम्भोग हर किसी से! कोई ऐसी देवी है जिसका संबंध पति के सिवा किसीओर से न रहा हो ? आदर्श उच्चतम रखो पर जियो निम्नतम–'यही परंपरा रही है अपनी।''[2]

सामाजिक विसंगतियों में भ्रष्टाचार

व्यक्ति पर समाज का प्रभाव उसके जीवन को आयाम प्रदान करता है। चूंकि कथाकार भी समाज का एक हिस्सा होता है इसलिए एक समय कथाकार की दृष्टि प्राचीन व नवीन विचारों की बीच की टकराहट को बारीकी से अवलोकन करने कीहोती है। काशीनाथ सिंह एक संवेदनशील रचनाकार है। वे समाज में फैली विसंगतियों और भ्रष्टाचार की स्थितियों को यर्थाथ तरीके से अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करते हैं। वे रचनाओं मे सामाजिक, आर्थिक, जातीय, राजनैतिक पक्षों सें संबंधित विसंगतियों को अपनी रचनाओं में बखूबी प्रस्तुत करते हैं। काशीनाथ सिंह जी की ' कहानी ' कविताकी नई तारीख में समाज में फैल रही कृत्रिमता व भ्रष्टाचार को मान्यता देती हुई सामाजिक व्यवस्था पर करारा व्यंग्य है। इस कहानी में भ्रष्ट व्यवस्था, बेईमान लोंगो द्वारा ईमानदारी का निरादर करते हुए दिखाया है। कहानी का नायक भ्रष्ट व्यवस्था व बेईमानी पर व्यंग्य करते हुए कहता है–'' यही एक मुल्क है जिसमें झूठ, फरेब, बेईमानी,घूसखोरी इतनी हसरत की नज़र से देखी जाती है, समझी ? हसरत की नज़र से''[3] इस कहानी में भ्रष्टाचार से करहाती हुई इन व्यवस्थाओं में समाज की विद्रूपताओं को परत दर परत इस प्रकार खोला है कि भ्रष्टाचार की सामाजिक स्वीकृति को स्पष्ट देखा जा सकता है।प्रस्तुत कथन में एक अफसर की बानगी से यह पता चलता

RRIJM 2015, All Rights Reserved

है–'' आप समझते होंगेकि मै बेईमान हूँ क्योकि अफसर हूँ इस पूरे जिले मे मेरे बारे मे पूछकर देखिए।लोग रुह से काँपते है मेरी सख्ती और ईमानदारी का डंका पिट चुका है। जिस अखबारके मालिक से अब तक एक लाख ऐंठ चुका हूँ, दस बीस हजार नही पूरे एक लाख, वहीअपने अखबार में मेरी ईमानदारी, सेवा, निष्ठा, त्याग और कर्तव्य की भावना कीतारीफ के पुल बाँधता है।''[4]

काशीनाथ सिंह समाज में शोषण, असमानता का भी अपनी रचनाओं में चित्रण करते है। स्वतंत्रता मिलने के बाद भी संविधान द्वारा प्रदत्त समानता के अधिकार का हनन लगातार हो रहा है। अनूसुचित जातियों, जनजातियों को भी यह अधिकार प्राप्त नहीं हो सका है।अपनी रचनी ' रेहन पर रग्घू ' में सामाजिक असमानता व शोषण की समस्या कोउजागर करते है। वे लिखते हैं– '' लोग मज़ाक में लिखा करते थे कि सिवान में झूरीपहलवान का खेत जोतता है और पहलवान चमटोल में उसका खेत! हिसाब बराबर !और झुरी का यह था कि जब वह खेत जोतकर घर लोटता तो छब्बू घर में, बाजार सेलौटता तो छब्बू घर में! वह उसके होने की आहट मिलते ही उल्टे पाँव वापस! डसनेएक बार हिम्मत की। हाथ जोडकर कहा मालिक मेरी नहीं तो कम से कम अपनीइज्जत का तो ख्याल कीजिए। लोग क्या कहतें है आपके बारे में ? इसका नतीजा यहहुआ कि वह पखवारे भर हल्दी, प्याज बदन पर पोत कर घर में पडा रहा।''[5]

महिला अधिकार, प्रेम व नारी की सामाजिक स्थिति –

काशीनाथ सिंह का साहित्य यथार्थ की पृष्ठभुमि पर लिखा गयाहै। उनकी दृष्टि सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म वास्तविकताओं को परख लेती है। उन्होंने अपनेसाहित्य में ना सिर्फ कठोरता, विद्रूपताओं को स्थान दिया है बल्कि प्रेम, महिलाअधिकारों व दाम्पत्य जीवन को भी भरपूर स्थान दिया गया है। वे प्रेम के बदलते रुप से भली भाँति परिचित हैं । ' रेहन पर रग्घू ' उपन्यास में वे लिखते हैं– '' संजयने प्यार किया था सोनल को। यह प्यार किसी सडक छाप लुच्चे युवक का दिलफेंकप्यार नहीं था, इसमें गुणाभाग था और जोड़ घटाना भी! जितना गहरा था उतनाही व्यापक। सोनल संजय के प्रोफेसर की इकलौती बेटी थी। थ्रु आउट फस्ट क्लास,नेट और दर्शन से पीएचडी। नौकरी तो पक्की थी बनारस के विश्वविद्यालय में जहाँउसके मामा कुलपति थे।''[6]प्रेम के बदलते मूल्यों को रेखांकित करते हैं।प्रेम में निश्छलता की परिकल्पना की गई है। आज प्रेम का स्वरुप भी बदलगया है। संजय, सोनल के प्रेम में स्वार्थवादिता ढूंढ़ता है। संजय का प्रेम सुविधापर आधारित है। यह समान्य बदलते मूल्यों की परिणति है। आज व्यक्ति उपयोगितावाद की ओर बढ़ रहा है। संजय के माध्यम से काशीनाथ सिंह

काशीनाथ सिंह भारतीय समाज में व्याप्त दहेज की कुरीतियों की ओर भीसंकेत करते हैं। दहेज की समस्या भारतीय समाज में जड़ तक व्याप्त है। दहेजप्रथा के नकारात्मक प्रभाव को उजागर करते हुए बेमेल विवाह व स्त्री अधि–कारों के हनन को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। ' रेहन पर रग्घू 'में वे लिखते है– '' तुम्हारें पापा, उनकी परेशनियाँ में समझ सकता हूँ। बतातेरहो उनके बारे में। भी तक बहन अविवाहित है, परेशान हैं उनकी शादी कोलेकर। छोटा भाई है तुम्हारा, पिछले तीन चार साल से ' कैट 'मैट' दे रहा है।लोकसेवा आयोग का टेस्ट दे रहा है और किसी में नहीं आ रहा है– उसकीपरेशानी!––––– तुमने बताया की तुम्हारी पढाई के लिए लोन भी लेते रहे हैं, रेहनभी रखे है खेत– इन सारी परेशनियों से निपटने के लिए कितने की जरुरतहोगी उन्हें? उनसे बतिया कर तो देखो। क्या चाहते हैं वे? कितना चाहते हैं?''[7]दहेज की इसी प्रथा के कारण न जाने कितनी नवविवाहित लडकियों के साथ अत्याचार हो रहा है। दहेज लेने व देने को सामाजिक प्रतिष्ठा से जोडा जाताहै। इससे जातीय बंधन ओर मजबूत हुए हैं। काशीनाथ जी बदलते प्रेम केस्वरुप व अलहड़पन को बखूबी समझते हैं। प्रेम के इस रुप में नैतिक–अनैतिक का विचार नहीं होता। यह प्रेम को एडवेंचर व मजा करने का विषय मानता है। सरला प्रेम के इसी रुप को जीना चाहती है वह प्रेम कोआनंद की वस्तु मानती है। ' रेहन पर रग्घू ' में वे लिखते हैं– ''सरला का मनबैचेन, देह बैचेन! महज प्यार भरी बातें और तडप! और कुछ नही!––––– प्यार बंदव सुरक्षित कमरे की चीज नहीं! खतरों से खेलने का नाम है प्यार। लोगों की भीड से बचते–बचाते उन्हे धता बताते, उनकी नजरो को चकमा देते जोकिया जाता है– वह है प्यार! शादी से पहले नहीं चाहती थी सरला। शादी के बाद तो यह विश्वासघात होगा, व्याभिचार होगा। अनैतिक होगा। जो करनाहै, पहले कर लो। अनुभव कर लो एक बार। मर्द का स्वाद! एक एडवेंचर जस्टफार फन! ''[8]

निष्कर्षः–

काशीनाथ जी ' रेहन पर रग्घू ' में प्रेम की अनेक विडंबनाओं को उजागरकरते हैं। जब प्रेम अमर्यादित होकर उच्चश्रृंखलता से गुजरने लगता है, तब यह सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह खडा कर देता है। प्रेम महिलास्वतंत्रता व स्वच्छदंता पर काशीनाथ सिंह खुलकर स्त्री मनोभावों को प्रकटकरते हैं। यथा समाज में नारी बंधन, दहेज प्रथा जहाँ उनकी स्वतंत्रता का हनन करते हैं। वही दूसरी ओर उच्चश्रृंखलता कहीं न कहीं समाज में नई व्यवस्थाको जन्म देती है। काशीनाथ सिंह ने समाज के स्वरुप, व्याप्त भ्रष्टाचार,

विसंगतियों, महिला अधिकार बदलते मानवीय मूल्यों को बिना किसीलाग– लपेट के प्रस्तुत किया है। वह समाज के वास्तविक यथार्थ को प्रस्तुतकरता है। वे समाज को सम्पूर्णता में देखते हैं इसलिए उनकी अतिसूक्ष्म दृष्टिने उनकी कथा साहित्य में यथार्थ को धरातल पर उतारा है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ :

1– काशी के अस्सी– काशीनाथ सिंह– पृष्ठ संख्या– 4
2– वही, पृष्ठ संख्या– 33
3– नई तारीख– काशीनाथ सिंह– पृष्ठ संख्या– 33
4– वही, पृष्ठ संख्या– 20
5– रेहन पर रग्घू– काशीनाथ सिंह– पृष्ठ संख्या– 73
6– वही, पृष्ठ संख्या– 20
7– वही, पृष्ठ संख्या– 23
8– वही, पृष्ठ संख्या– 31

RRIJM 2015, All Rights Reserved